eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

शैक्षिक तकनीकी का आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव

[1]डॉ0 कृष्ण कुमार सिंह
[1]एसोसिएट प्रोफेसर बी.एड. विभाग, रामनगर पीजी कॉलेज, रामनगर, बाराबंकी (उ0प्र0)

Received: 15 June 2018, Accepted: 15 July 2018, Published on line: 15 Sep 2018

Abstract

आज के युग में मानव जीवन का प्रत्येक पक्ष वैज्ञानिक खोजों तथा आविष्कारों से प्रभावित है। शिक्षा का क्षेत्र भी इसके प्रभाव से मुक्त नहीं रह सका है। रेडियो, टेपरिकॉर्डर, टेलीविजन, रेडियो–विजन, कंप्यूटर आदि का बढ़ता हुआ उपयोग, शिक्षा को तकनीकी के निकट लाता जा रहा है। वर्तमान की आधुनिक शिक्षा सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए सहज और सरल हो गया है। इस शैक्षिक तकनीकी के कारण दूर–दराज के छात्र भी आधुनिक शिक्षा का लाभ पा रहे हैं। सत्य तो यह है कि तकनीकी विज्ञान इतना शक्तिशाली होता जा रहा है कि बिना इसका अध्ययन किए छात्रों का शिक्षा संबंधी ज्ञान या उनके परिक्षण में प्राप्त ज्ञान और कौशल अधूरे समझे जाते हैं।

मुख्य शब्द– शैक्षिक तकनीकि, आधुनिक शिक्षा, ज्ञान, कौशल, शिक्षण, प्रभाव, नवाचार।

INTRODUCTION

शैक्षिक तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन कर उन्हें एक नवीन स्वरूप प्रदान किया है। शैक्षिक खिलौनों का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में भी किया जाने लगा। सर्वप्रथम सन् 1926 में अमेरिका के एक विश्वविद्यालय में 'सिडनी प्रेसी' नामक व्यक्ति ने शिक्षण मशीन का प्रयोग शिक्षण के क्षेत्र में किया। शैक्षिक तकनीकी का आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव तब पड़ा जब सन् 1950 में सर स्किनर ने प्रोग्राम्ड लर्निंग पद्धति का विकास किया और इस प्रकार से तकनीकी स्वयं शिक्षा के क्षेत्र से जुड़ने लगी और एक समय ऐसा आया कि प्रोग्राम्ड लर्निंग तथा श्रव्य– दृश्य– सामग्री को ही शैक्षिक तकनीकी का पर्याय माना जाने लगा। धीरे–धीरे शैक्षिक तकनीकी शिक्षण प्रक्रिया को अधिक ठोस, व्यावहारिक एवं प्रभावपूर्ण बनाने में स्वयं को अधिक सक्षम रूप में प्रस्तुत करने में समर्थ होती गई।

शिक्षा के विभिन्न अंगों को सबल और सक्षम बनाने का कार्य राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली का है। इस परिषद के अंतर्गत एक विभाग 'शैक्षिक तकनीकी केंद्र' के

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

नाम से कार्यरत है। यह विभाग शोध एवं प्रशिक्षण के साथ–साथ शैक्षिक तकनीकी पर 'विशिष्ट सामग्री' भी विकसित करने में संलग्न है।

तकनीकी जीवन और समाज के हर पहलू को छू रही है। आजादी के बाद से, हमारे देश में तकनीकी शिक्षा प्रणाली काफी बड़े आकार की प्रणाली में उभरी है, जो देश भर में संस्थानों में प्रमाण पत्र, डिप्लोमा, डिग्री, स्नाकोत्तर डिग्री और डॉक्टरेट स्तर पर विभिन्न प्रकार के व्यापारों और विषयों में शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करती है। भारत में उच्च शिक्षा का सामान्य परिदृश्य वैश्विक गुणवत्ता मानकों के बराबर नहीं है। इसलिए देश के शैक्षिक संस्थानों की गुणवत्ता के बढ़ते मूल्यांकन के लिए पर्याप्त औचित्य है। तकनीकी शिक्षा के मानक को बनाए रखने के लिए अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (एआईसीटीई) की स्थापना 1945 में हुई थी। एआईसीटीई मानदंडों और मानकों की योजना, निर्माण और रखरखाव, मान्यता के माध्यम से गुणवत्ता आश्वासन, प्राथमिक क्षेत्रों में वित्त पोषण के लिए जिम्मेदार है। निगरानी और मूल्यांकन प्रमाणीकरण और पुरस्कारों की समानता बनाए रखना और देश में तकनीकी शिक्षा के समेकित और एकीकृत विकास और प्रबंधन को सुनिश्चित करना है।

आधुनिक युग में तकनीकी शिक्षा की भारी मांग है। उम्र में विकसित जीवन का पैटर्न कुछ 50 साल पहले हमारे समाज में मिलने वाले व्यक्ति से बहुत अलग है। कई मामलों में पेशेवर तकनीकी शिक्षा द्वारा सामान्य शिक्षा को प्रतिस्थापित किया गया है। तकनीकी शिक्षा रोजगार और सफल कैरियर के लिए अच्छा अवसर प्रदान करती है। तकनीकी शिक्षा समग्र शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा हिस्सा योगदान देती है और हमारे देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में तकनीकी शिक्षा को विभिन्न स्तरों पर प्रदान किया जाता है। जैसे कि शिल्प कौशल, डिप्लोमा और डिग्री, स्नातकोत्तर और विशेष क्षेत्रों में अनुसंधान तकनीकी विकास और आर्थिक प्रगति के विभिन्न पहलुओं को पूरा करना, इसके अलावा बेरोजगारी की इस उम्र में केवल तकनीकी शिक्षा नौकरी और आरामदायक रहने का आश्वासन दे सकती है, जो लोग अभी भी पारंपरिक संस्थानों में हैं, परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं, जिनके पास आधुनिक प्रणालियों में थोड़ी प्रासंगिकता हैं, उन्हें रोजगार के अवसर नहीं मिलते हैं और स्वाभाविक रूप से, वे निराशा के पीड़ित बनने के लिए खत्म हो जाते हैं। भारत में वर्षों से तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता और उपलब्धता को काफी हद तक मजबूत किया है, जो स्नातक की रोजगार दर को दोगुना कर रहा है, जो अब भारतीय उद्योग की जरूरतों के अनुरूप बेहतर हैं। इसलिए, पारंपरिक अध्ययन का समर्थन करने और तकनीकी शिक्षा को पढ़ाने की सख्त

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

जरूरत है, क्योंकि इससे न केवल देश के विकास में मदद मिलेगी, बल्कि वह कौशल रखने वाले व्यक्ति भी होंगे। तकनीकी शिक्षा, शिक्षा का एक हिस्सा है, जो सीधे विनिर्माण और सेवा उद्योगों में आवश्यक जानकारी और कौशल प्राप्त करने से संबंधित है।

भारत में नए औद्योगिक और श्रमिक रुझानों ने स्पष्ट रूप से तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता को निर्दिष्ट किया है, लेकिन माध्यमिक स्तर की शिक्षा में तकनीकी शिक्षा का आधार मजबूत होना चाहिए और छात्रों को इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए एक स्पष्ट मार्ग बनाया जाना चाहिए। तकनीकी विश्वविद्यालयों के साथ उच्च गुणवत्ता की अधिक तकनीकी डिग्री स्थापित की जानी चाहिए। शैक्षिक तकनीकी, शिक्षण कार्य को उद्देश्य– केंद्रित बनाने में तथा छात्र– केंद्रित रखने में सहायता प्रदान करती है। शैक्षिक तकनीकी, छोटे तथा बड़े समूह में एवं व्यक्तिगत स्तर पर भी शिक्षण एवं अधिगम संबंधी उद्दीपन तथा अनुक्रिया प्रदान करके, शिक्षक की गुणात्मक योग्यता का विस्तार करती है।

शैक्षिक तकनीकी, शिक्षक को पाठ प्रस्तुतीकरण को प्रभावशाली बनाने में सहायता करती है अतः शिक्षण प्रक्रिया को सरल, सुगम एवं रोचक बना कर छात्रों के ज्ञान एवं अनुभव की वृद्धि में सहायक होती है। स्व–अनुदेशित कार्यक्रमों के माध्यम से शैक्षिक तकनीकी व्यक्तिगत अनुदेशन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शैक्षिक तकनीकी शिक्षण– अधिगम प्रक्रिया को अधिक जीवंत, रोचक, प्रेरक तथा सक्रिय बनाकर शिक्षण में सुधार लाकर शिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि करती है।

जनसंचार के साधनों का उपयोग करते हुए दूर–दराज क्षेत्रों में एक साथ बहुत बड़ी जनसंख्या तथा पत्राचार दूरस्थ शिक्षा आदि के द्वारा शिक्षा पहुंचाने में सहायता देती है। शिक्षार्थियों के आर्थिक, सामाजिक तथा भौगोलिक स्तर पर बिना ध्यान दिए हुए शैक्षिक तकनीकी सभी के लिए समान शिक्षा के अवसर प्रदान करने के लिए एक शक्तिशाली साधन है। टेलीविजन, रेडियो,कैसेट, वीडियो आदि साधनों के माध्यम से शैक्षिक तकनीकी सेवारत शिक्षकों एवं कर्मचारियों के लिए अनवर शिक्षा के द्वार खोलती है। अतः शैक्षिक तकनीकी घर में बैठे–बैठे उपाधियाँ प्राप्त करने में सहायक होती है। निष्कर्षतः आधुनिक शिक्षा का प्रचार– प्रसार में अभिवृद्धि हुई हैं। अब कॉलेज या विश्वविद्यालय में भी पढ़ने और पढ़ाने की शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से सरल और सहज हो गया है। अतः डॉक्टर एस. एस. कुलकर्णी के शब्दों में ''शैक्षिक तकनीकी उन सभी प्रणालियों विधियों एवं माध्यमों का विज्ञान है जिसके द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है।' तकनीकी के उपयोग ने शिक्षा को आसान बनाने के साथ–साथ रोचक भी बना दिया है। आमतौर पर बच्चे स्कूल जाना पसंद नहीं करते हैं,

लेकिन जब से ये स्मार्ट क्लासेज शुरू हुई हैं, उसके बाद वे बस वहीं रहना पसंद करते हैं। इन स्मार्ट कक्षाओं के अलावा शैक्षिक उद्देश्यों के लिए और भी बहुत सारे सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं।

निष्कर्षः– शैक्षिक तकनीकी कई मायनों में मददगार हैं, खासकर शिक्षा के लिहाज से। यह छात्रों में रूचि विकसित करने और नई चीजें सीखने में मदद करता है। आजकल यह नवजात बच्चे को भी मोबाइल फोन की आदत हो जाती है और जब बच्चे इन प्लेटफामों पर अपने शिक्षा प्राप्त करेंगे, तो निश्चित रूप से वे इसे पसंद करेंगे।

सन्दर्भ–

1. अग्रवाल,जे०सी० (2016): शैक्षिक तकनीकी सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी :श्री विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा –2
2- Shukla] Satish S Prakash ¼2017½% Information communication and Educational Technology] Agrawal Publications] Agra
3- Pal] kulvinder% शैक्षिक तकनीकी, लक्ष्मी पब्लिकेशन प्रा. लि. नई दिल्ली
4- शर्मा. आर. ए. : शैक्षिक तकनीकी, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ (यू.पी.)
5- शिक्षा एवं विद्या (1998) : अखंड ज्योति संस्थान, मथुरा (यू.पी.)